International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 191-192

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 191-192
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-03-2017
Accepted: 10-04-2017

Ghodake Somashankar
Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India

Correspondence
Ghodake Somashankar
Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India

पाणिनीय व्याकरण में अवसान का स्वरूप

Ghodake Somashankar

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में वेदों का विशेष महत्व रहा है, साथ ही साथ वेदाङ्गों का भी अपना वैशिष्ट्य रहा है। उनमें व्याकरणशास्त्र को मुख की संज्ञा दी गयी है। व्याकरणों के आचार्यों में महर्षि पाणिनि की प्रसिद्धि अद्वितीय वैयाकरण के रूप में हमेशा से रही है। महाभाष्य में पतञ्जलि ने व्याकरण के मुख्य पाँच प्रयोजनों को स्पष्ट किया है, उसमें चौथा प्रयोजन लघु है। और पाणिनि अपनी लाघवप्रियता के लिए है। अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में व्याकरण के पारिभाषिक शब्दों के लिए संज्ञाओं का उल्लेख किया है। संज्ञाओं के माध्यम से सूत्रों को संक्षिप्तता प्रदान की जाती है। महर्षि पतञ्जलि ने भी कहा है–

''लघ्वर्थं हि संज्ञाकरणम्।''

ग्रन्थ में एक–दो या कुछ और सूत्रों द्वारा विपुल अर्थ को प्रकट करने के लिए एक पारिभाषिक संज्ञा का विधान कर दिया जाता है और ग्रन्थ में जहाँ–जहाँ उस अर्थ को प्रकट करना जरूरी होता है वहाँ–वहाँ उस छोटी सी पारिभाषिक संज्ञा से कार्य किया जाता है। पारिभाषिक–संज्ञा–रूप अल्प शब्दों से अनेक बातों को स्पष्टतः कहा जा सकता है। भावाभिव्यक्ति का सौन्दर्य अर्थ–लाघव में समाहृत होता है। इसी को ध्यान में रखकर अष्टाध्यायी में प्रयुक्त 'अवसान' संज्ञा के प्रयोग एवं अभिप्राय को स्पष्ट किया जा रहा है–

''अवसान'' शब्द की व्युत्पत्ति अवपूर्वक षो अन्तकर्मणि धातु में 'कृत्यल्युटो बहुलम्' [1] सूत्र से भाव अर्थ में ल्युट् प्रत्यय तथा ''अवस्यतेऽनेन'' इति या ''अवस्यतेऽस्मिन्निति'' ऐसी भी व्युत्पत्ति करके ''करणाधिकरणयोश्च'' [2] सूत्र से करण या अधिकरण अर्थ में ल्युट् प्रत्यय होकर निष्पत्ति होती है।

यहाँ यह ध्यान रखना जरूरी है कि, ''अवसान'' शब्द के भावार्थक रहने पर अन्त ''अवसान'' कहलाता है। और करणार्थक या अधिकरणार्थक रहने पर जिससे अथवा जिसमें अन्त होता है उस अन्तिम वर्ण को ''अवसान'' कहा जाता है। अतएव यह अन्वर्थ संज्ञा है, साथ ही महती भी। पाणिनि ने ''विरामोऽवसानम्'' [3] में ''अवसान'' शब्द को स्पष्ट करते हुए कहा है कि, विराम की ''अवसान'' संज्ञा होती है। इसका अभिप्राय यह है कि वर्णों के अभाव की अथवा उच्चारण में जो अन्तिम वर्ण है उस वर्ण की ''अवसान'' संज्ञा होती है। उक्त अर्थ काशिकावृत्ति के आधार पर किया गया है। वहाँ विराम शब्द में भाव और करण अर्थ में घञ् प्रत्यय माना गया है। ''सिद्धान्त कौमुदी'' [4] में बताया गया है कि उच्चारण के अभाव की ''अवसान'' संज्ञा होती है।

काशिकावृत्ति की टीकायें न्यास [5] और पदमञ्जरी [6] तथा सिद्धान्तकौमुदी की टीकायें तत्वबोधिनी [7] और बालमनोरमा [8] में भी ''विराम'' शब्द को भावार्थक माना गया है। जिससे ''विरतिर्विरामः'' या ''विरमर्ण विरामः'' ऐसी व्युत्पत्ति करके भावार्थक घञ् प्रत्यय हुआ है। और न्यास, पदमञ्जरी और तत्वबोधिनी में विराम शब्द को करणार्थक भी स्वीकार किया है। जिससे ''विरम्यतेऽनेनेति'' ऐसी व्युत्पत्ति करके घञ् प्रत्यय हुआ है। यहाँ यह ध्यान देना जरूरी है कि ''विराम'' शब्द में करण अर्थ में घञ् प्रत्यय हो या अधिकरण अर्थ में दोनों का फलितार्थ एक ही है। अतएव ''रामः'' इत्यादि उदाहरणों में ''राम र्'' की स्थिति रहने पर तथा ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' [9] इस सूत्र में अवसान का अर्थ वर्णों का अभाव मानने पर रेफ के बाद में वर्णों का अभाव है, उस अभाव के रहते उक्त सूत्र द्वारा रेफ को विसर्ग हो जाता है। अथवा उक्त सूत्र में अवसान का अर्थ अन्त्य वर्ण मानने पर ''राम र्'' की स्थिति में रेफ ''अवसान'' में अन्त्य वर्ण के रूप में वर्तमान है, अतः उसे विसर्ग हो जाता है। ऋग्वेदप्रातिशाख्य में विना परिभाषा के ही अनेक स्थलों पर अवसान शब्द प्रयुक्त हुआ है। [10] यहा ''अवसान'' के लिए अवसित शब्द भी आया है। [11] ऋ.प्रा. 1/15 में भाष्यकार उवट ने ''अवसान'' का

अर्थ पदावसान किया है। तैत्तिरीयप्रातिशाख्य में भी ''अवसान'' और उसके लिए ''अवसित'' शब्द प्रयुक्त हुआ है। [12] वाजसनेयिप्रातिशाख्य् [13] और शौनकीयाचतुराध्यायिका [14] में ''अवसान'' शब्द का प्रयोग किया गया है। ऋक्तन्त्र [15] और सामतन्त्र [16] में ''अवसान'' के अर्थ में प्रयुक्त होने वाले विराम शब्द के लिए उसके एकदेश 'म' का प्रयोग प्राप्त होता है। पुष्यसूत्र में ''अवसान'' के लिए विराम शब्द प्रयुक्त हुआ है। [17]

संदर्भ ग्रन्थाः

1. अष्टा. 3/3/113
2. अष्टा. 3/3/117
3. अष्टा. 1/4/110
4. वर्णानामभावो अवसान संज्ञः स्यात् सि.कौ.सू. 27
5. ''विरतिर्विरामः'' इति भावे घञ्।। न्या. 1/4/110
6. ''विराम इति भावे घञ्।।'' प.म. 1/4/110
7. ''विरामणं विरामः भावे घञ्।।'' त.बो.सू. 50
8. विरामः भावे घञ्।।'' बा.म.सू. 27
9. अष्टा. 8/3/15
10. तस्मादन्त्यमवसाने तृतीयं गार्ग्य स्पर्शम्।। ऋ.प्रा. 1/15
11. नावसितम्।। ऋ.प्रा. 6/7
12. अवसितं पूर्वस्य।। तै.प्रा. 2/9/3
13. परावसाने।। वा.प्रा. 3/31
14. पुरुष आ बभूर्वा इत्यवसाने।। शौ.च.अ 1/70
15. उन्नीचो मे।। ऋ.तं. 2/6/4
16. में उन्नीचो सा.तं. 11/5/9
17. व्यन्जनमपराङ्गं विरामे लुप्यते – ।। पु.सू. 7/5